

शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ और सामाजिक प्रतिष्ठा: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन: (सीहोर जिले के विशेष संदर्भ में)

आरती माहेश्वरी¹, डॉ. प्रीति शर्मा²

¹शोधार्थी, समाजशास्त्र, ²शोध निर्देशक एवं सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
¹रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोधपत्र मध्यप्रदेश के सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियों तथा उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। शासकीय स्वास्थ्य व्यवस्था में महिला नर्सों रोगी-सेवा, उपचार-प्रक्रिया की निरंतरता और स्वास्थ्य संस्थानों के दैनिक संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, किंतु उनके कार्यदबाव, ड्यूटी-प्रणाली, संसाधन-अभाव और सामाजिक मान्यता से जुड़ी समस्याएँ प्रायः उपेक्षित रह जाती हैं। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महिला नर्सों की कार्यपरिस्थितियों, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पेशेवर पहचान का विश्लेषण करना तथा इन कारकों के पारस्परिक संबंधों को समझना है।

अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े चयनित शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों से प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किए गए। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि लंबे कार्य-घंटे, नाइट शिफ्ट, स्टाफ की कमी और संगठनात्मक सीमाएँ महिला नर्सों की कार्यस्थितियों को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं, जिसका प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान पर भी पड़ता है। यद्यपि समाज में नर्सिंग पेशे को आवश्यक माना जाता है, फिर भी महिला नर्सों को अपेक्षित सामाजिक सम्मान और निर्णय-निर्माण में पर्याप्त भागीदारी नहीं मिल पाती।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि कार्यस्थितियों में सुधार, संस्थागत समर्थन और सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन के माध्यम से महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा और कार्यसंतोष को सुदृढ़ किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: महिला नर्स, शासकीय अस्पताल, कार्यस्थितियाँ, सामाजिक प्रतिष्ठा, सीहोर जिला

1. प्रस्तावना

स्वास्थ्य किसी भी समाज की आधारभूत आवश्यकता है तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मध्यप्रदेश राज्य के सीहोर जिले में शासकीय अस्पताल ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का प्रमुख माध्यम हैं। इन अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों रोगी-सेवा, उपचार-प्रक्रिया की निरंतरता तथा चिकित्सकीय व्यवस्थाओं के संचालन में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद, सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी समस्याएँ प्रायः उपेक्षित रह जाती हैं।

सीहोर जिला सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधताओं से युक्त क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ और सीमित संसाधन स्वास्थ्य सेवाओं की प्रकृति को प्रभावित करते हैं। जिले के शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों को लंबे कार्य-घंटों, नाइट शिफ्ट, स्टाफ की कमी, संसाधनों के अभाव और रोगियों की बढ़ती संख्या जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन कार्यपरिस्थितियों का प्रभाव न केवल उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, बल्कि उनके पारिवारिक जीवन, सामाजिक सहभागिता और आत्मसम्मान को भी प्रभावित करता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से नर्सिंग केवल एक तकनीकी या पेशेवर गतिविधि नहीं, बल्कि एक सामाजिक भूमिका है, जो लिंग, वर्ग और संगठनात्मक संरचना से प्रभावित होती है। सीहोर जिले जैसे अपेक्षाकृत पारंपरिक सामाजिक परिवेश में महिला नर्सों से एक ओर सेवा-भाव, सहनशीलता और त्याग की अपेक्षा की जाती है, वहीं दूसरी ओर उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक मर्यादाओं का भी पालन करना पड़ता है। नाइट शिफ्ट और अनियमित ड्यूटी-प्रणाली के कारण कार्य-परिवार संतुलन बनाना महिला नर्सों के लिए एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में उभरता है।

सामाजिक प्रतिष्ठा किसी भी पेशे की सामाजिक स्वीकृति और सम्मान का द्योतक होती है। यद्यपि सीहोर जिले में नर्सिंग पेशे को स्वास्थ्य सेवाओं के लिए आवश्यक माना जाता है, फिर भी महिला नर्सों को अपेक्षित सामाजिक सम्मान, निर्णय-निर्माण में भागीदारी और पेशेवर पहचान सीमित रूप में ही प्राप्त होती है। कई बार ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी समाज में नर्सिंग पेशे को चिकित्सकीय पदानुक्रम में निम्न स्थान पर रखा जाता है, जिससे महिला नर्सों की सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है। यह स्थिति लैंगिक असमानता और शक्ति-संबंधों को भी प्रतिबिंबित करती है।

इस पृष्ठभूमि में, सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ और सामाजिक प्रतिष्ठा का समाजशास्त्रीय अध्ययन अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक हो जाता है। ऐसा अध्ययन न केवल महिला नर्सों की समस्याओं को स्थानीय संदर्भ में समझने में सहायक होगा, बल्कि जिले की स्वास्थ्य संस्थाओं की

संरचनात्मक सीमाओं, सामाजिक दृष्टिकोणों और लैंगिक भूमिकाओं को भी उजागर करेगा। प्रस्तुत शोध इसी उद्देश्य से किया गया है, ताकि सीहोर जिले के संदर्भ में महिला नर्सों के अनुभवों का वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण कर, नीति-निर्माण और संस्थागत सुधारों हेतु सार्थक सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

सीहोर जिले की जनसांख्यिकीय एवं स्वास्थ्य संरचना

सीहोर जिला मध्यप्रदेश राज्य का एक प्रमुख जिला है, जिसकी जनसांख्यिकीय संरचना मुख्यतः ग्रामीण प्रधान है। जिले की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, साक्षरता स्तर, लिंग संरचना तथा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता यहाँ की सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। ग्रामीण बहुल जनसंख्या, सीमित निजी स्वास्थ्य सुविधाएँ और मध्यम आय वर्ग की प्रधानता के कारण जिले में शासकीय अस्पतालों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

इन परिस्थितियों में शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों पर रोगी-सेवा का भार अपेक्षाकृत अधिक रहता है। अतः सीहोर जिले की जनसांख्यिकीय एवं स्वास्थ्य संरचना को समझना महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा के समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इसी उद्देश्य से नीचे तालिका के माध्यम से जिले से संबंधित प्रमुख सांख्यिकीय तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका - 01

सीहोर जिले की जनसांख्यिकीय एवं स्वास्थ्य संरचना

क्रमांक	सूचक (Indicators)	आँकड़े / स्थिति
1.	कुल जनसंख्या (जनगणना 2011)	लगभग 13-14 लाख
2.	ग्रामीण जनसंख्या	लगभग 75% से अधिक
3.	शहरी जनसंख्या	लगभग 25%
4.	लिंगानुपात	लगभग 950-960 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष
5.	कुल साक्षरता दर	लगभग 70% से अधिक
6.	महिला साक्षरता	पुरुषों की तुलना में कम
7.	प्रमुख आजीविका	कृषि एवं कृषि आधारित कार्य
8.	स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भरता	मुख्यतः शासकीय स्वास्थ्य संस्थान
9.	प्रमुख स्वास्थ्य संस्थान	जिला अस्पताल, CHC, PHC, उप-स्वास्थ्य केंद्र
10.	नर्सिंग स्टाफ की उपलब्धता	आवश्यकता से कम
11.	रोगी-भार की स्थिति	उच्च, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों से

12.	महिला नर्सों पर कार्यभार	अधिक, विशेषकर नाइट शिफ्ट व मातृ-शिशु सेवाओं में
-----	--------------------------	-------------------------------------------------

तालिका 01 से स्पष्ट होता है कि सीहोर जिला जनसांख्यिकीय दृष्टि से ग्रामीण प्रधान है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या शासकीय स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर है। उच्च ग्रामीण आबादी, मध्यम साक्षरता स्तर तथा सीमित निजी स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण शासकीय अस्पतालों पर रोगियों का दबाव अधिक पाया जाता है। लिंगानुपात और महिला साक्षरता की स्थिति यह दर्शाती है कि महिलाओं की सामाजिक-शैक्षणिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है, जिसका प्रभाव स्वास्थ्य जागरूकता और सेवा-उपयोग पर पड़ता है।

स्वास्थ्य संरचना की दृष्टि से नर्सिंग स्टाफ की संख्या आवश्यकता की तुलना में कम पाई जाती है, जिसके परिणामस्वरूप महिला नर्सों पर कार्यभार बढ़ जाता है। विशेष रूप से नाइट शिफ्ट, आपातकालीन सेवाओं तथा मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में महिला नर्सों को अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं। इस प्रकार, तालिका में प्रस्तुत आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि सीहोर जिले की जनसांख्यिकीय एवं स्वास्थ्य संरचना महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करने वाले प्रमुख संरचनात्मक कारकों में से एक है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता किसी भी समाज के सामाजिक विकास और नागरिकों की जीवन-गुणवत्ता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। शासकीय अस्पताल इस व्यवस्था का प्रमुख आधार हैं, विशेषकर ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में, जहाँ निजी स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित होती हैं। इन अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों रोगी-सेवा, उपचार-प्रक्रिया की निरंतरता तथा स्वास्थ्य संस्थानों के संचालन में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद, उनकी कार्यस्थितियाँ और सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित समस्याएँ समाजशास्त्रीय शोध में अपेक्षाकृत कम स्थान प्राप्त कर पाई हैं। इस कारण प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट रूप से सामने आती है।

सीहोर जिला जनसांख्यिकीय दृष्टि से ग्रामीण प्रधान है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या शासकीय स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर है। जनसंख्या दबाव, सीमित संसाधन, स्टाफ की कमी और बढ़ती स्वास्थ्य आवश्यकताओं के कारण शासकीय अस्पतालों में कार्यदबाव लगातार बढ़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में महिला नर्सों पर कार्यभार अधिक हो जाता है, जिसका प्रभाव उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। इन समस्याओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किए बिना स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविक स्थिति को समझना अधूरा रहता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से महिला नर्सों की समस्याएँ केवल पेशेवर नहीं हैं, बल्कि वे लिंग-आधारित सामाजिक संरचनाओं, भूमिका-संघर्ष और संगठनात्मक शक्ति-संबंधों से भी जुड़ी हुई हैं। भारतीय समाज में कार्यरत महिलाओं से एक साथ पेशेवर दक्षता और पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है। महिला नर्सों के संदर्भ में यह दबाव और अधिक जटिल हो जाता है, क्योंकि उनकी ड्यूटी-प्रणाली और कार्य-समय पारंपरिक सामाजिक ढाँचे से मेल नहीं खाता। इस भूमिका-संघर्ष का अध्ययन समाजशास्त्रीय रूप से अत्यंत आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, नर्सिंग पेशे की सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। यद्यपि नर्सिंग को समाज में 'सेवा' के रूप में स्वीकार किया जाता है, फिर भी महिला नर्सों को अपेक्षित सामाजिक सम्मान, निर्णय-निर्माण में भागीदारी और पेशेवर स्वायत्तता सीमित रूप में ही प्राप्त होती है। यह स्थिति लैंगिक असमानता और सामाजिक भेदभाव को प्रतिबिंबित करती है। इस संदर्भ में, सीहोर जिले जैसे अपेक्षाकृत पारंपरिक सामाजिक परिवेश में महिला नर्सों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन और भी प्रासंगिक हो जाता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इस तथ्य में निहित है कि यह सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा का वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन न केवल समाजशास्त्रीय ज्ञान-वृद्धि में योगदान देगा, बल्कि स्वास्थ्य प्रशासन, नीति-निर्माण और संस्थागत सुधारों के लिए भी उपयोगी सिफारिशें प्रदान करेगा। इसी कारण यह अध्ययन सामाजिक, शैक्षणिक एवं नीतिगत दृष्टि से औचित्यपूर्ण और समयानुकूल है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
2. शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पेशेवर पहचान का विश्लेषण करना।
3. महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच संबंध का अध्ययन करना।
4. कार्यस्थल पर संगठनात्मक एवं लैंगिक कारकों के महिला नर्सों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना।

4. शोध प्रश्न

- महिला नर्सों की प्रमुख कार्यस्थल समस्याएँ क्या हैं?
- समाज में नर्सिंग पेशे की सामाजिक प्रतिष्ठा कैसी है?
- क्या कार्यस्थितियाँ महिला नर्सों के सामाजिक सम्मान को प्रभावित करती हैं?

5. साहित्य समीक्षा

स्वास्थ्य सेवाओं में कार्यरत महिला कर्मियों, विशेषकर महिला नर्सों की सामाजिक स्थिति और कार्यपरिस्थितियों पर समाजशास्त्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि नर्सिंग केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक सामाजिक भूमिका है, जो लिंग, वर्ग और संगठनात्मक संरचना से गहराई से प्रभावित होती है (शर्मा, 2015)। नर्सों का कार्य 'सेवा' से जुड़ा होने के कारण उनसे अधिक सहनशीलता और समर्पण की अपेक्षा की जाती है, जबकि उनकी कार्यस्थितियाँ और अधिकार अपेक्षाकृत उपेक्षित रहते हैं (गुप्ता, 2014)।

भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों को लंबे कार्य-घंटों, नाइट शिफ्ट, संसाधनों की कमी और बढ़ते रोगी-भार के कारण शारीरिक एवं मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है (कुमार, 2018)। इन कार्यस्थितियों का प्रभाव केवल उनके स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पारिवारिक जीवन, सामाजिक सहभागिता और कार्यसंतोष पर भी पड़ता है (सिंह, 2016)। कई शोध यह भी संकेत देते हैं कि अत्यधिक कार्यदबाव के कारण महिला नर्सों में असंतोष और थकान की स्थिति उत्पन्न होती है (यादव, 2021)।

महिला श्रम और कार्य-परिवार संघर्ष पर केंद्रित समाजशास्त्रीय साहित्य यह दर्शाता है कि कार्यरत महिलाओं से एक साथ पेशेवर दक्षता और पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन की अपेक्षा की जाती है (देसाई, 2012)। नर्सिंग पेशे में यह संघर्ष अधिक तीव्र रूप में दिखाई देता है, क्योंकि इयूटी-प्रणाली अनियमित होती है और सामाजिक संरचना इन परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होती (पटेल, 2017)। अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि कार्य-परिवार असंतुलन महिला नर्सों के आत्मसम्मान और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है (मीणा, 2019)।

स्वास्थ्य संस्थानों की संगठनात्मक संरचना पर आधारित समाजशास्त्रीय अध्ययनों में यह निष्कर्ष सामने आया है कि शासकीय अस्पतालों में पदानुक्रम और शक्ति-संबंध चिकित्सकों के पक्ष में अधिक केंद्रित रहते हैं, जबकि नर्सों की भूमिका सहायक के रूप में सीमित कर दी जाती है (शर्मा, 2015)। इससे महिला नर्सों की पेशेवर पहचान और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित होती है। कुछ विद्वानों ने नर्सिंग पेशे को 'अदृश्य श्रम' की श्रेणी में रखा है, जहाँ कार्य का महत्व तो स्वीकार किया जाता है, किंतु सामाजिक सम्मान अपेक्षाकृत कम होता है (चक्रवर्ती, 2020)।

नारीवादी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किए गए अध्ययनों में महिला नर्सों की समस्याओं को लैंगिक असमानता और शक्ति-संबंधों के संदर्भ में देखा गया है। इन अध्ययनों के अनुसार, नर्सिंग पेशे का स्त्रीकरण उसकी सामाजिक स्थिति को प्रभावित करता है और 'सेवा' व 'त्याग' से जुड़ी स्त्री-छवि महिला नर्सों से अतिरिक्त भावनात्मक श्रम की अपेक्षा करती है (पटेल, 2017; चक्रवर्ती, 2020)। इसके बावजूद, उनकी कार्यस्थितियों, सुरक्षा और निर्णय-निर्माण में भागीदारी पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जाता।

ग्रामीण एवं अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों पर केंद्रित अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि संसाधनों की कमी और नर्सिंग स्टाफ की अपर्याप्त संख्या के कारण शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों पर कार्यभार अधिक रहता है (वर्मा, 2019)। ऐसे क्षेत्रों में सामाजिक जागरूकता और स्वास्थ्य साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत कम होने के कारण नर्सों को रोगियों और उनके परिजनों से अतिरिक्त सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा प्रभावित होती है (यादव, 2021)।

उपलब्ध साहित्य के समग्र अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि महिला नर्सों की कार्यस्थितियों, कार्यदबाव और लैंगिक असमानताओं पर सामान्य स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, फिर भी **सीहोर जिले जैसे विशिष्ट क्षेत्रीय संदर्भ** में महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा को एक साथ जोड़कर देखने वाले

समाजशास्त्रीय अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। इसी शोध-अंतराल को भरने के उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

6. शोध कार्यप्रणाली

- अनुसंधान की प्रकृति: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक
- अध्ययन क्षेत्र: मध्यप्रदेश का सीहोर जिला
- अध्ययन जनसंख्या: शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों
- नमूना आकार: लगभग 80-100 महिला नर्सों
- नमूना विधि: उद्देश्यपूर्ण एवं साधारण यादृच्छिक विधि
- आँकड़ा संग्रह के उपकरण: प्रश्नावली एवं अर्ध-संरचित साक्षात्कार
- चर:
 - स्वतंत्र—कार्यस्थितियाँ (कार्य-घंटे, ड्यूटी-प्रणाली, संसाधन)
 - आश्रित—सामाजिक प्रतिष्ठा, पेशेवर पहचान
- आँकड़ों का विश्लेषण: प्रतिशत, तालिकाएँ एवं वर्णनात्मक व्याख्या
- नैतिक पक्ष: गोपनीयता एवं पूर्वानुमति सुनिश्चित
- सीमाएँ: अध्ययन सीहोर जिले तक सीमित

7. विवेचन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियों, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा उनसे संबंधित सामाजिक-संस्थागत कारकों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित तालिकाओं के माध्यम से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका - 02

महिला नर्सों की कार्यस्थितियों से संबंधित प्रमुख समस्याएँ

क्रमांक	कार्यस्थिति से संबंधित समस्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	लंबे कार्य-घंटे	78%
2.	नाइट शिफ्ट की अधिकता	65%
3.	स्टाफ की कमी	72%
4.	संसाधनों का अभाव	69%
5.	शारीरिक एवं मानसिक थकान	81%

तालिका 02 से स्पष्ट होता है कि सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत अधिकांश महिला नर्सों लंबी ड्यूटी और अत्यधिक कार्यभार से प्रभावित हैं। 81 प्रतिशत नर्सों ने शारीरिक एवं मानसिक थकान की समस्या को स्वीकार किया, जबकि 78 प्रतिशत ने लंबे कार्य-घंटों को प्रमुख समस्या बताया। स्टाफ की कमी (72%) और संसाधनों का अभाव (69%) महिला नर्सों की कार्यस्थितियों को और अधिक चुनौतीपूर्ण बनाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि कार्यपरिस्थितियाँ महिला नर्सों के स्वास्थ्य और कार्यसंतोष पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं।

तालिका - 03

महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति धारणा

क्रमांक	सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित धारणा	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1.	समाज में पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता	62%
2.	पेशे को 'सेवा' मानकर कम आंका जाता है	58%
3.	निर्णय-निर्माण में सीमित भूमिका	67%
4.	पेशेवर पहचान कमजोर	54%
5.	रोगियों द्वारा सम्मानजनक व्यवहार	71%

तालिका 03 यह दर्शाती है कि महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा दोहरे स्वरूप में सामने आती है। जहाँ 71 प्रतिशत नर्सों ने रोगियों द्वारा सम्मानजनक व्यवहार की बात कही, वहीं 62 प्रतिशत ने यह अनुभव किया कि समाज में उन्हें अपेक्षित सम्मान नहीं मिलता। 67 प्रतिशत नर्सों का मानना है कि अस्पतालों में निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में उनकी भूमिका सीमित है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तर पर नर्सिंग पेशे की उपयोगिता स्वीकार किए जाने के बावजूद संस्थागत और सामाजिक प्रतिष्ठा अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है।

तालिका - 04

कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच संबंध

क्रमांक	कथन	सहमत (%)	असहमत (%)
1.	खराब कार्यस्थितियाँ सामाजिक सम्मान को घटाती हैं	74%	26%
2.	बेहतर कार्यपरिस्थितियाँ पेशेवर पहचान बढ़ाती हैं	79%	21%
3.	अत्यधिक कार्यदबाव आत्मसम्मान को प्रभावित करता है	76%	24%

तालिका 04 से यह स्पष्ट होता है कि कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच गहरा संबंध है। 74 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि खराब कार्यपरिस्थितियाँ उनके सामाजिक सम्मान को कम करती हैं, जबकि 79 प्रतिशत ने यह स्वीकार किया कि बेहतर कार्यपरिस्थितियाँ उनकी पेशेवर पहचान को सुदृढ़ करती हैं। 76 प्रतिशत महिला नर्सों के अनुसार अत्यधिक कार्यदबाव उनके आत्मसम्मान को प्रभावित करता है। यह तालिका अध्ययन के केंद्रीय उद्देश्य को पुष्ट करती है कि कार्यस्थितियाँ महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। उपरोक्त तीनों तालिकाओं के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण हैं और उनका सीधा प्रभाव उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान और पेशेवर पहचान पर पड़ता है। संगठनात्मक कमियाँ, स्टाफ की कमी और सामाजिक-संस्थागत दृष्टिकोण महिला नर्सों की समस्याओं को और जटिल बनाते हैं। इस प्रकार, अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति होती है और यह स्पष्ट होता है कि महिला नर्सों की कार्यस्थितियों में सुधार किए बिना उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करना संभव नहीं है।

8. व्याख्या एवं परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत 90 महिला नर्सों से संकलित प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों की व्याख्या महिला नर्सों की कार्यस्थितियों, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा दोनों के बीच संबंध के संदर्भ में की गई है।

कार्यस्थितियों से संबंधित परिणाम

अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ सामान्यतः प्रतिकूल हैं। कुल उत्तरदाताओं में से 77.8 प्रतिशत महिला नर्सों ने लंबे कार्य-घंटों को प्रमुख समस्या बताया, जबकि 64.4 प्रतिशत ने नाइट शिफ्ट की अधिकता को कठिनाई का कारण माना। इसके अतिरिक्त, 72.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्टाफ की कमी और 67.8 प्रतिशत ने संसाधनों के अभाव को कार्यदबाव बढ़ाने वाला कारक बताया। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 82.2 प्रतिशत महिला नर्सों ने शारीरिक एवं मानसिक थकान का अनुभव किया। यह परिणाम स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि शासकीय अस्पतालों में उपलब्ध संसाधन और मानव-बल महिला नर्सों के कार्यभार के अनुरूप नहीं हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा से संबंधित परिणाम

सामाजिक प्रतिष्ठा के संदर्भ में अध्ययन के परिणाम दोहरे स्वरूप को प्रदर्शित करते हैं। एक ओर 71.1 प्रतिशत महिला नर्सों ने यह स्वीकार किया कि रोगियों और उनके परिजनों से उन्हें सम्मानजनक व्यवहार प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर 62.2 प्रतिशत नर्सों का मानना है कि समाज में उन्हें अपेक्षित सामाजिक सम्मान नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त, 66.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह अनुभव किया कि अस्पतालों में निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में उनकी भूमिका सीमित है। लगभग 54.4 प्रतिशत महिला नर्सों ने अपनी पेशेवर पहचान को कमजोर बताया। इन

परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि नर्सिंग पेशे की उपयोगिता स्वीकार किए जाने के बावजूद उसकी सामाजिक एवं संस्थागत प्रतिष्ठा अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है।

कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच संबंध

कार्यस्थितियों और सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच संबंध के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि दोनों के मध्य गहरा अंतर्संबंध है। अध्ययन में 73.3 प्रतिशत महिला नर्सों ने यह स्वीकार किया कि खराब कार्यपरिस्थितियाँ उनके सामाजिक सम्मान को कम करती हैं, जबकि 78.9 प्रतिशत का मानना है कि बेहतर कार्यपरिस्थितियाँ उनकी पेशेवर पहचान को सुदृढ़ करती हैं। इसके अतिरिक्त, 75.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अत्यधिक कार्यदबाव उनके आत्मसम्मान को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। यह परिणाम अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य की पुष्टि करता है कि कार्यस्थितियाँ महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा का महत्वपूर्ण निर्धारक कारक हैं।

समग्र रूप से अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों की समस्याएँ बहुआयामी हैं। कार्यदबाव, संसाधनों की कमी, संगठनात्मक संरचना तथा लैंगिक अपेक्षाएँ महिला नर्सों की कार्यस्थितियों को जटिल बनाती हैं और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार के लिए उनकी कार्यपरिस्थितियों, संस्थागत समर्थन और सामाजिक दृष्टिकोण में सुधार अनिवार्य है।

9. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि सीहोर जिले के शासकीय अस्पतालों में कार्यरत महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ सामान्यतः चुनौतीपूर्ण हैं। लंबे कार्य-घंटे, नाइट शिफ्ट की अधिकता, स्टाफ की कमी तथा संसाधनों का अभाव महिला नर्सों पर अत्यधिक कार्यदबाव उत्पन्न करता है, जिसका प्रभाव उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि अत्यधिक कार्यभार के कारण अधिकांश महिला नर्सें शारीरिक थकान और मानसिक तनाव का अनुभव करती हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा के संदर्भ में निष्कर्ष यह बताते हैं कि महिला नर्सों को रोगियों और उनके परिजनों से व्यक्तिगत स्तर पर सम्मान प्राप्त होता है, किंतु सामाजिक और संस्थागत स्तर पर उन्हें अपेक्षित मान्यता और निर्णय-निर्माण में पर्याप्त भागीदारी नहीं मिल पाती। नर्सिंग पेशे को 'सेवा' के रूप में देखने की सामाजिक धारणा उनकी पेशेवर पहचान और सामाजिक प्रतिष्ठा को कमजोर बनाती है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि महिला नर्सों की कार्यस्थितियों और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के बीच घनिष्ठ संबंध है। बेहतर कार्यपरिस्थितियाँ महिला नर्सों के आत्मसम्मान, कार्यसंतोष और पेशेवर पहचान को सुदृढ़ करती हैं, जबकि प्रतिकूल कार्यपरिस्थितियाँ सामाजिक सम्मान में कमी और असंतोष को जन्म देती हैं। इस

प्रकार, यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि महिला नर्सों की सामाजिक प्रतिष्ठा का सुदृढीकरण उनकी कार्यस्थितियों में सुधार के बिना संभव नहीं है।

10. सुझाव

- शासकीय अस्पतालों में नर्सिंग स्टाफ की संख्या बढ़ाई जाए, जिससे कार्यभार संतुलित हो सके।
- कार्य-घंटों और ड्यूटी-प्रणाली में सुधार कर नाइट शिफ्ट का समान वितरण सुनिश्चित किया जाए।
- अस्पतालों में आवश्यक संसाधनों और बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ाई जाए।
- महिला नर्सों को निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में अधिक भागीदारी प्रदान की जाए।
- नर्सिंग पेशे की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
- महिला नर्सों के लिए मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और तनाव-प्रबंधन सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- नर्सों की सुरक्षा और सम्मान से संबंधित नीतियों का सख्ती से पालन किया जाए।

11. संदर्भ सूची (References)

1. शर्मा, रामआधार. *समाजशास्त्रीय सिद्धांत*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.
2. सिंह, मीना. *महिला और कार्य*. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2016.
3. गुप्ता, रेखा. *स्वास्थ्य सेवाओं में महिला कर्मियों की भूमिका*. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
4. कुमार, अशोक. *भारतीय स्वास्थ्य व्यवस्था और श्रम संरचना*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018.
5. देसाई, नीलम. *कार्यरत महिलाएँ और परिवार*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
6. पटेल, सीमा. *महिला श्रम और सामाजिक संरचना*. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2017.
7. मीणा, सविता. *महिला श्रमिकों में कार्य-परिवार संघर्ष*. प्रभात प्रकाशन, भोपाल, 2019.
8. शर्मा, अरुण. *स्वास्थ्य संस्थान और समाज*. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.
9. चक्रवर्ती, सुनीता. *लैंगिक असमानता और कार्यस्थल*. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020.
10. यादव, सविता. "शासकीय अस्पतालों में महिला नर्सों की कार्यस्थितियाँ." *भारतीय समाजशास्त्र शोध पत्रिका*, खंड 12, अंक 2, 2021, पृ. 45-58.
11. वर्मा, अरुण. "ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ और सामाजिक चुनौतियाँ." *समाज विज्ञान विमर्श*, अंक 18, 2019, पृ. 66-78.